iJRASET
International Journal For Research in
Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 12 **Issue:** XI **Month of publication:** November 2024

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2024.64935

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 12 Issue XI Nov 2024- Available at www.ijraset.com

समकालीन हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श

संजय कुमार यादव
शोधार्थी

शोध सार: हिंदी कथा साहित्य में हाशिए पर रखे गए अपेक्षित समुदायों के प्रति समय-समय पर चिंतन किया जाता रहा है। रचनाओं की नदियां बहा दी गईं, जिनमें नारी चिंतन, दलित विमर्श, आदिवासी, किसान, किन्नर विमर्श आदि प्रमुख हैं। ये विमर्श और चिंतन उपेक्षित समुदायों को उनके प्रति किए गए अत्याचारों एवं अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए थे, परंतु इनमें से अधिकांश को हमारे समाज में निम्न स्तर पर ही स्वीकृति प्राप्त हुई। संवैधानिक दृष्टिकोण से भी इन्हें अपने अधिकार प्राप्त हो चुके थे। ये विमर्श तो केवल उन्हें जागरूक करने के लिए किए गए, किंतु इनमें केवल एक ऐसा समुदाय है जो आज तक अपने अस्तित्व और पहचान के लिए सदियों से संघर्ष करता आया है, और वह वर्ग है किन्नर। वही किन्नर, जिन्हें साधारण बोलचाल की भाषा में हिजड़ा या छक्का कहकर पुकारा जाता है। आज तक यही एक समुदाय है जिसे न तो परिवार ने अपनाया और न ही समाज ने कानूनी रूप से। उन्हें तमाम सुविधाओं से दूर रखा गया, जिन पर उनका पूर्ण हक था। उनकी इस दयनीय स्थिति को देखकर हिंदी साहित्य मौन नहीं रह सका। उन उपेक्षितों पर साहित्य का चिंतन किन्नर विमर्श के रूप में एक आंदोलन बनकर उभरा।
बिज शब्द: किन्नर, हिजड़ा, छक्का, अधिकार, कानून, विमर्श, अत्याचार, हाशिए

I. समकालीन हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श

समकालीन हिंदी उपन्यासों का गहराई से अध्ययन के पश्चात् यह स्पष्ट होने लगता है कि इनमें स्त्री, दलित, आदिवासियों पर विमर्श के अलावा अब किन्नरों पर भी गंभीरता से चर्चा की जाने लगी है। शुरुआती दौर की बात करें तो पांडे बेचन शर्मा की कहानियों में हमें जिन लौंडे-बाजों का चित्रण मिलता है, वे किन्नर ही होते हैं। निराला द्वारा रचित ‘कुल्ली भाट’ का चित्रण यद्यपि एक समलैंगिक व्यक्ति के रूप में देखने को मिलता है, परंतु शिवप्रसाद सिंह जी की रचनाएं ‘बहावृति’ तथा ‘बिंदा महाराज’ के पात्र तो किन्नर ही हैं, जो समाज से जूझते हुए दिखते हैं। इसके साथ ही वृंदावन लाल वर्मा की एकांकी ‘नीलकंठ’ का भी समावेश किया जा सकता है।

सही तौर पर किन्नरों के संबंध में हिंदी साहित्य में चुप्पी नीरजा माधव द्वारा रचित उपन्यास ‘यमदीप’ (2005) से टूटती है, तथा हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श पर रचा गया पहला उपन्यास का दर्जा भी ‘यमदीप’ को ही प्राप्त है। यह अपने बनावट की दृष्टिकोण से एक प्रतीकात्मक उपन्यास रहा है। किन्नर समाज की स्थिति, दशा, अवस्था और पीड़ा का चित्रण इस उपन्यास में अपने वास्तविक रूप में हुआ है। भारतीय समाज में दीपावली पर्व के अवसर पर दीपावली के पूर्व की संध्या को घर से बाहर दीप जलाने की प्रथा है, और इस दीप को लगाने के बाद पुनः दुबारा मुड़कर उसकी तरफ नहीं देखा जाता। उसी दीपक की तरह समाज में किन्नरों की स्थिति को रचनाकार ने अपने उपन्यास ‘यमदीप’ में दिखाने का प्रयास किया है।

‘यमदीप’ उपन्यास की कथावस्तु किन्नर नाज बीवी के आसपास घूमती है। वह इस उपन्यास की केंद्रीय बिंदु एवं नायिका है। घर में जब उसका जन्म होता है, तब से उसके घर वाले परेशान रहते हैं क्योंकि वह बच्चा हिजड़े के रूप में जन्मा है। हिजड़ा होने के बाद भी माँ उसे बहुत प्यार करती है। पढ़ाई में भी वह बहुत आगे थी, परंतु आठवीं कक्षा तक पहुंचाने के बाद स्त्री युक्त शरीर में दाढ़ी-मूछ आ जाते हैं, जिसके कारण लोग उन्हें देखकर हंसने लगे। वह आगे की पढ़ाई नहीं कर पाई और अंततः परेशान होकर स्वयं हिजड़ों की दुनिया में चली गई। वहां जाने के बाद उसका नाम नजीब भी रख दिया गया। इस उपन्यास में किन्नर को भारतीय समाज की मुख्यधारा से जोड़कर यह दिखाया गया है कि अगर माता-पिता किन्नर बच्चे को स्वीकार भी करना चाहते हैं, तो समाज उसे स्वीकार नहीं करने देता है।

समकालीन हिंदी साहित्य में किन्नर चिंतन के संदर्भ में दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास महेंद्र भीष्म द्वारा रचित ‘किन्नर कथा’ है। इस उपन्यास में राजवंश में जन्मी सोना के संघर्ष का चित्रण किया गया है। उपन्यास के पात्र जगत सिंह को जब पता लगता है कि सोना किन्नर है, तब वह दीवान को सोना की हत्या का आदेश प्रदान करता है। किंतु दीवान ऐसा नहीं कर पाते और उसे किन्नर गुरु तारा तक पहुंचा देते हैं। उपन्यास में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि केवल एक जननांग की कमी के कारण हंसते-खेलते इंसान को पशुओं के समान जीवन जीने को विवश होना पड़ता है।

महेंद्र भीष्म का ही दूसरा किन्नर चिंतन के विषय में लिखा हुआ अति महत्वपूर्ण उपन्यास ‘मैं पायल हूं’ है। इस उपन्यास में किन्नरों को शापित और नर्क के समान जीवन जीते दिखाया गया है। इसमें पायल सिंह के जीवन के संघर्ष को केंद्र बनाकर रचना की गई है। पायल को जुगनी के रूप में जाना जाता है। पायल अपने किन्नर पहचान के कारण घर छोड़ने के लिए विवश होती है और रेलवे स्टेशन पर प्रौढ़ व्यक्तियों द्वारा यौन शोषण का शिकार भी होती है। आगे वह अपनी वेशभूषा बदलकर अपनी रक्षा करती है और संघर्ष करते हुए अपने योग्यता और दम पर प्रसिद्धि और धन भी प्राप्त करती है।

इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार यह चित्रित कर दर्शाने का प्रयास करते हैं कि अगर किन्नर अपनी मेहनत और बल से विभिन्न दिशाओं में काम करें, तो उन्हें अच्छे परिणाम और फल अवश्य ही प्राप्त होंगे। उपन्यास की केंद्रीय पात्र पायल शिक्षा में बहुत अधिक तेज होते हुए भी अपने परिवारजनों द्वारा बाहर निकाली जाती है, कारण यह है कि वह एक हिजड़ा है। इस उपन्यास के द्वारा उपन्यासकार यह संदेश देना चाहते हैं कि समाज की धारणा तब बदलेगी जब परिवार द्वारा अपनाया जाएगा। यहां परिवार भी किन्नर के रूप में जन्मे बच्चे को तिरस्कृत और घृणा की दृष्टि से देख रहा है।

किन्नर विमर्श पर लेखनी चलाने वाले रचनाकारों में प्रदीप सौरभ का नाम उल्लेखनीय है। किन्नर के जीवन को केंद्र बनाकर प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित उपन्यास ‘तीसरी ताली’ है। यह तीसरी ताली हमारे समाज की वह ताली है जिसे कभी अपनाया नहीं गया। इस उपन्यास में किन्नर समाज की प्रमुख समस्याओं के साथ ही उनके जीवन जीने की पद्धति, पेट भरने के तरीके तथा उनके सामाजिक-आर्थिक विषयों को केंद्र में रखकर रचना की गई है। यह उपन्यास विनीत उर्फ विनीता, राजा उर्फ रानी, ज्योति और मंजू की कहानी है। उपन्यास की केंद्रीय पात्र विनीता पारिवारिक और सामाजिक रूप से उपेक्षा का शिकार बनती है, परंतु जब विनीत के पिता उसे एक प्रतिष्ठित संस्थान से ब्यूटीशियन का कोर्स करवा देते हैं, तब उसके जीवन में कुछ सकारात्मक परिवर्तन आता है। उपन्यास के पात्र ज्योति के माध्यम से उपन्यासकार ने लौंडा रखने के विषय में भी खुलासा किया है। ज्योति निर्धनता के कारण पहले लौंडा बनती है, और आगे चलकर वह अनुभव करती है कि लौंडा बनाकर असामान्य सेक्स व्यवहार करते हुए उसने अपना वास्तविक व्यवहार भूल लिया है। इसी प्रकार, अपनी इच्छा से वह लिंग छेदन करवा इस समूह में प्रवेश लेती है।

उपन्यास में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि पैसों के लाभ के कारण किन्नर कॉल गर्ल बनकर काम करने लगते हैं। गरीबी और भूख के चक्कर में फंसकर वे जिस्म के धंधे में चले जाते हैं। इसके साथ ही रचनाकार ने यह भी दिखाया कि जब गौतम और आनंदी आंटी के घर किन्नर बच्चा पैदा होता है, तो वे कुछ साल तो जैसे-तैसे बिताते हैं, किंतु इसका अंत आत्महत्या जैसे कांड से समाप्त होता है।

किन्नर चिंतन के संदर्भ में 2013 में प्रकाशित निर्मला बुराडिया का उपन्यास ‘गुलाल मंडी’ में किन्नर के जीवन की जटिल विषय पर लेखनी चलाई गई है। इस उपन्यास में समाज की जिस्मफरोशी और मानव तस्करी की खतरनाक दुनिया को चित्रित किया गया है। लेखिका ने अपने इस उपन्यास का नाम ‘गुलाल मंडी’ शायद इसलिए रखा है कि इसमें विश्व स्तर पर मानव देह बाजार की कड़वी सच्चाई को दिखाने का प्रयास किया गया है।

इस उपन्यास की विषय वस्तु तीन महिला पात्रों—कल्याणी, जानकी और अंगूरी—के आसपास घूमती है। उपन्यास की तीसरी केंद्रीय समस्या थर्ड जेंडर के अंतर्गत ट्रांसजेंडर और ट्रांसेक्सुअल हिजड़े से जुड़ी है। अंगूरी पात्र के माध्यम से उपन्यासकार ने किन्नर के प्रति समाज की उपेक्षा को प्रस्तुत किया है। लेखिका ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि किन्नर आर्थिक बेरोजगारी में फंसकर देह व्यापार का शिकार बनते हैं।

भगवत अनमोल का किन्नर विमर्श पर लिखा गया उपन्यास ‘जिंदगी 50-50’ है। इस उपन्यास में लेखक ने किन्नर समुदाय की इच्छाओं और कक्षाओं को संसार के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उपन्यास की कहानी एक गांव के परिवेश से प्रारंभ होती है। उपन्यास के विषय को दो किन्नर पात्र हर्षा और सूर्या के इर्द-गिर्द रखा गया है। हर्षा का भाई अनमोल बचपन से ही देख रहा है कि हर्षा को किन्नर होने के कारण हर कदम पर तिरस्कार झेलना पड़ता है।

आगे उपन्यास में दिखाया गया है कि अनमोल भी एक किन्नर पुत्र का पिता बनता है, जिसका नाम सूर्या है। अनमोल अपने किन्नर पुत्र सूर्या की शक्ति बनता है और उसके लिए समाज से टकराता है। उपन्यास के द्वारा यह संदेश देने का प्रयास किया गया है कि किन्नर भी उचित शिक्षा और वातावरण प्राप्त कर समान सम्मानपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

प्रसिद्ध उपन्यासकार चित्रा मुद्गल का उपन्यास ‘पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा’ किन्नर समाज के जीवन पर प्रकाश डालता है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र विनोद है। विनोद अपनी मां का लाड़ला और होशियार बालक है। धीरे-धीरे विनोद के अंदर चेतना उभरने लगती है और वह अपने आप को अन्य बच्चों से अलग पाता है। समय के साथ आगे विनोद बिन्नी बन जाता है। मां से बेहद प्यार होने के बावजूद विनोद मां के साथ नहीं रह पाता है; वह पत्रों के माध्यम से अपने जीवन के संघर्ष से अपनी मां को परिचित करवाता रहता है। बिन्नी बनी विनोद चाहती है कि किन्नर लोग भी पढ़े-लिखे और शिक्षित बनें, और समाज की मुख्य धारा में शामिल होकर अपना जीवन जी सकें, किंतु वह राजनेताओं के हाथों की कठपुतली बनकर उनके षड्यंत्र का शिकार हो जाता है।

किन्नर चिंतन के विषय पर 2005 में प्रकाशित अनसूया त्यागी का उपन्यास ‘मैं भी औरत हूं’ प्रसिद्ध रहा है। इस उपन्यास के प्रमुख केंद्रीय पात्र रोशनी और मंजुला हैं। रोशनी और मंजुला शारीरिक बनावट के तौर पर तो नारी हैं, किंतु दोनों का जनन अंग विकसित नहीं हो पाया। इसी कारण सभ्य कहलाने वाला समाज उन दोनों को नारी के तौर पर स्वीकार नहीं करता है। इस उपन्यास की विषय वस्तु एक सत्य घटना पर आधारित है, जिसमें देखा जाता है कि एक पिता अपने दोनों बेटियों का अस्पताल में जननांग का ऑपरेशन करवाकर उन्हें अच्छी शिक्षा प्रदान करता है और जीवन व्यतीत करने हेतु प्रेरित करता है। अतः इस उपन्यास द्वारा लेखिका यह संदेश देना चाहती हैं कि इलाज के माध्यम से किन्नर समाज के लोगों को अच्छे इंसान बनाया जा सकता है।

II. निष्कर्ष

समकालीन हिंदी उपन्यास लेखन ने गहराई के साथ समाज में किन्नरों की जो स्थिति है, उन्हें एक-एक कर प्रत्यक्ष लाने का प्रयास किया है। सभी उपन्यासकारों के उपन्यासों में किन्नर समुदाय की मजबूरी, उनकी दिन-प्रतिदिन की पीड़ा और समाज में उनके साथ हो रहे भेदभाव को स्पष्ट कर पाठकों को दिखाने का अच्छा प्रयास किया गया है। आज किन्नर समुदाय के लोग भी विश्व स्तर पर अपने अधिकारों को पाने का प्रयत्न कर रहे हैं। भारत में किन्नरों को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता प्राप्त है। देश में किन्नरों की संख्या लगभग 50 लाख है। इतनी संख्या होने के बावजूद दुर्भाग्य की बात यह है कि इन्हें समाज में हाशिए पर रखा जाता है।

अधिकारों और अस्तित्व को सदियों से नकारा जाता रहा है। समाज का उपेक्षित व्यवहार, रोजगार का अभाव, शिक्षा का अभाव और परिवार द्वारा कम उम्र में ही त्यागे जाने के कारण वे अंदर से पूरी तरह टूट चुके हैं। किंतु उनके जीवन की समस्याओं को लेकर अब उपन्यास एवं रचनाएं लिखने का जो सिलसिला प्रारंभ हुआ है, वह आगे भी पाठकों को उनकी समस्याओं से परिचित करवाता रहेगा। ये सभी उपन्यास जहां एक ओर किन्नर यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं, वहीं दूसरी ओर किन्नर समुदाय में आ रही चेतना को भी स्पष्ट तौर पर प्रकट कर रहे हैं। वह समय जल्दी आएगा जब समाज में किन्नर समुदाय भी सामान्य लोगों की तरह सम्मानपूर्वक अपना जीवन यापन कर पाएगा।

संदर्भ ग्रंथ

[1] यमदीप,नीरजा माधव
[2] किन्नर कथा,महेंद्र भीष्म
[3] मैं पायल हूं,महेंद्र भीष्मा
[4] तीसरी ताली,प्रदीप सौरभ
[5] गुलाल मंडी,निर्मल भुराडिया
[6] जिंदगी 50-50,भगवंत अनमोल
[7] पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा,चित्रा मुद्गल
[8] में भी औरत हूं,अनसूया त्यागी

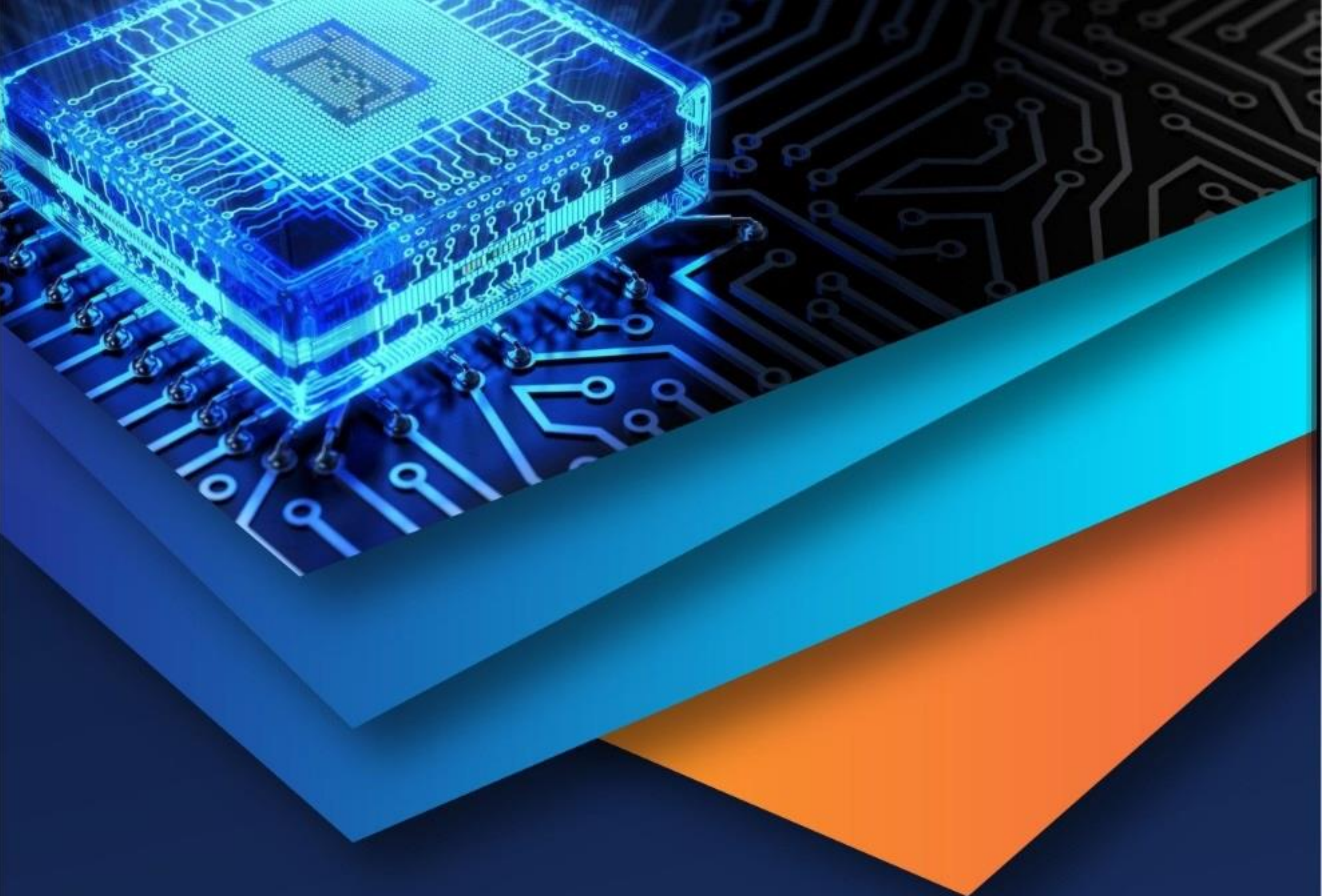

10.22214/IJRASET

INDEX COPERNICUS 45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)